प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

धर्म से अगले जन्म में भी आनन्द - आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 9 जून, 2010

पाप करने वाला व्यक्ति इस जन्म में दु:खी और अगले जन्म में भी दु:खी होता है। एक बार वह पाप करते समय खुश होता होगा लेकिन बाद में उसे पछताना पड़ता है। जो व्यक्ति धर्म का आचरण करता है जो धर्म का आचरण करने वाला होता है वह इस जन्म में आनन्द से रहता है और अगले जन्म में भी वह आनन्द से रहता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने स्थानीय चौरड़िया प्रसाल में निर्मित पण्डाल में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने धज़्मपद एवं उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में आगे कहा कि मनुष्य के सामने दो रास्ते हैं एक पाप का रास्ता और दूसरा धर्म का रास्ता है, व्यक्ति जो चाहे वह रास्ता अपना सकता है। जुआ खेलना, मांस खाना, व्यसन मदिरा का पान करना, , वैश्यागमन, शिकार, चोरी परस्त्रीगमन को पाप बताते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि ये सात प्रकार के व्यवसन हैं जो इनसे संकल्पपूर्वक मुक्त रहता वह धर्म का मार्ग अपना सकता है।

आचार्य महाश्रमण ने दसवें आलियं ग्रंथ का उल्लेख करते हुए कहा कि आदमी कल्याण की बात भी सुनता है और पाप की बात भी सुनता है जो उसे श्रेयस्कर लगे उस बात को ग्रहण करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जिस साधु में सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह होता है उसमें आनंद का श्रोत रहता है और एक गृहस्थ भी इन बातों को अपने जीवन में धारण करता है तो उसका गृहस्थ जीवन भी अच्छा बन जाता है, आत्मा का कल्याण संयम के द्वारा हो सकता है। श्रावक के लिए बारह व्रतों का विधान है संयम के लिए बारह व्रतों पर ध्यान देना चाहिए। बारहव्रत का जीवन में आना श्रेयस्कर है और उसका जीवन धार्मिक बन जाता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य वर्तमान जीवन को देखने के साथ भविष्य पर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा जब तक बुढ़ापा न आ जाए, व्याधि न आ जाए और शक्ति क्षीण न हो जाए तब तक धर्म की आराधना करते रहना चाहिए। मनुष्य में यह जागरूकता रहे कि बुढ़ापा आने से पहले साधना कर लेनी चाहिए।

समता मुज़्य धर्म है मन में राग-द्वेष का भाव न आए ऐसा प्रयास मनुष्य को हर करना चाहिए। जिस तरह से सूर्य उदय के समय भी रक्तिम में रहता है जो संपदा का प्रतिक होता है और अस्त के समय में भी रक्तिम रहता है जो विपदा का प्रतिक है दोनों स्थिति में सूर्य रक्तिम में रहता है उसी प्रकार मनुष्य को भी आपदा-विपदा में भी सम रहने का अज़्यास करना चाहिए।

इस अवसर पर दीपचन्द डागा, विमला छाजेड़, स्थानी तेरापंथ महिला मण्डल ने अपने विचार गीत व वक्तव्य के द्वारा प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

(मीडिया संयोजक)